फसल जल प्रबंधन से सम्बन्धित

प्रश्नः धान की फसल किस माह में क्या करने चाहिये?

उत्तरः

मई माह में –

- नर्सरी वाले खेत को जोतकर खुला छोड़ दें। ढैंचा की हरी खाद की बिजाई करें। 60 किग्रा. बीज/हेक्टेयर का प्रयोग करें।

जून में –

- धान की नर्सरी डालें। 40 दिन की ढैंचा की फसल को खेत में पलट दें।

जुलाई में –

- धान की रोपाई करें। रोपाई के समय संतुलित मात्रा में खाद का प्रयोग करें। रोपाई के एक सप्ताह के अंदर खरपतवार नियंत्रण हेतु ब्यूटाक्लोर दवा का छिड़काव करें।

अगस्त में –

- खैरा रोग के नियंत्रण हेतु 5 किग्रा. जिंक सल्फेट तथा 20 किग्रा यूरिया को 800 ली0 पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- फुदका रोग की रोकथाम हेतु मोनोकोटोफास 30 ई.सी 750 मिली/हे0 को 500–600 ली0 पानी में घोलकर छिड़काव करें।

सितम्बर में –

- फूल आने पर सिंचाई अवश्य करें।
- दूध बनने की अवस्था में सिंचाई अवश्य करें।
- फ्लैग लीफ की अवस्था में नत्रजन की खाद अवश्य डालें।

अक्टूबर में –

- कीट नियंत्रण हेतु दवाओं का छिड़काव करें। कटाई से 15 दिन पहले सिचाई बन्द कर दो।

प्रश्नः मक्का की फसल में कितनी सिंचाई और कब–कब करनी चाहिये?

उत्तरः

बिजाई की प्रारंभिक अवस्था में तथा सिल्किंग से दाना पड़ने की अवस्था पर पर्याप्त नमी होना आवश्यक ळें

प्रश्नः मूंगफली में सिंचाई किस अवस्था में अवश्य करनी चाहिये?

उत्तरः

यदि वर्षा न हो और सिंचाई की सुविधा हो तो दो सिंचाईयां खूटियों तथा फली बनते समय अवश्य करनी चाहिये।

प्रश्नः सोयाबीन की फसली के लिये कितना बीज प्रति हेक्टर डालना चाहिये?

उत्तरः

75–80 किग्रा. बीज प्रति हेक्टर डालना चाहिये।

प्रश्नः अरहर में किस समय सिंचाई आवश्यक है?

उत्तरः

खेत में कम नमी की अवस्था में फलियां बनने के समय एक सिंचाई अवश्य करनी चाहिये।

प्रश्नः मूंग की फसल की बुवाई का उचित समय क्या है?

उत्तरः

खरीफ की फसल की बुवाई जुलाई के अंतिम सप्ताह से अगस्त के तीसरे सप्ताह तक कर देनी चाहिये। 12–15 किग्रा. बीज प्रति हेक्टर की दर से बुवाई करनी चाहिये। जायद की मूंग की फसल की बुवाई अप्रैल के अंतिम सप्ताह से मई के दूसरे सप्ताह तक कर देनी चाहिये।

प्रश्नः मूंग की फसल में खाद कितना डालना चाहिये?

उत्तरः

मूंग एवं उड़द की फसल में 20–25 किग्रा. नत्रजन, 40 किग्रा. फास्फोरस एवं 20 किग्रा. सल्फर हेक्टर की दर से डालना चाहिये। दाना बनते समय 2 प्रतिशत यूरिया के घोल का छिड़काव करने से पैदावार में वृद्धि होती है।

प्रश्नः सरसों की फसल में कब पानी देना जरूरी है?

उत्तरः

फूल निकलने तथा दाना भरने की अवस्थाओं पर सिंचाई अत्यंत आवश्यक है। यदि एक ही सिंचाई की सुविधा उपलब्ध हो तो वह फूल निकलने पर अवश्य करें।

प्रश्नः गेंहू की फसल में कब–कब सिचाई करनी चाहिये?

उत्तरः

अगर पर्याप्त मात्रा में पानी उपलब्ध हो तो गेंहू में 6 सिंचाईयों की सिफारिस की जाती है।

- **पहली सिंचाई –** ताजमहल अवस्था – 20.25 दिन बाद
- **दूसरी सिंचाई –** बुवाई के 40–45 दिन बाद (कल्ले निकलते समय)

- **तीसरी सिंचाई** – बुवाई के 60–65 दिन बाद (गाठें बनने की अवस्था)
- **चौथी सिंचाई** – बुवाई के 80–85 दिन बाद (पुष्पा अवस्था)
- **पांचवी सिंचाई** – बुवाई के 100–105 दिन बाद (दुग्धावस्था)
- **छटवी सिंचाई** – बुवाई के 115–120 दिन बाद (दाना भरते समय)

प्रश्नः रबी मक्का की बिजाई का उपयुक्त समय क्या है?

उत्तरः

15 अक्टूबर से 15 नवम्बर तक रबी मक्का की बिजाई करें।

प्रश्नः रबी मक्का की बिजाई हेतु बीज मात्रा कितनी होनी चाहिये?

उत्तरः

20–22 किग्रा बीज प्रति हेक्टर पंक्ति से पंक्ति की दूरी 60 सेमी तथा पौधे से पौधे की दूरी 20–25 सेमी रखें।

प्रश्नः रबी मक्का में कितनी सिंचाई करनी चाहिये?

उत्तरः

रबी मक्का में 4–5 सिंचाई करनी चाहिये। प्रथम सिंचाई 25–30 दिन बाद, दूसरी 55–60 दिन, तीसरी 75–80 दिन, चौथी 110–115 दिन एवं पांचवी सिंचाई 120–125 दिन बाद करनी चाहिये।

प्रश्नः हमने अपनी फसल की वर्षा आने पर बिजाई कर दी है परन्तु अब बारिस नही हो रही है अब क्या करें?

उत्तरः

ऐसी स्थिति से बचने के लिये किसानों को

- जब तक पर्याप्त वर्षा न हो बुवाई आरंभ न करें। यदि बुवाई में विलम्ब हो रहा हो तो कम अवधि की सूखा सहनशील किस्मों का प्रयोग करें। किसान भाई फसलों में मल्च का प्रयोग करें।
- जल संरक्षण करके जीवन दायक सिंचाई की व्यवस्था रखें। कम पानी की सिंचाई विधियों का प्रयोग करें। पोषक तत्वों का घोल बनाकर छिड़काव करें।

प्रश्नः अगर वर्षा देर से आती है तो किसानों को क्या करना चाहिये?

उत्तरः

वर्षा देर से आने पर फसलों की बुवाई/रोपाई प्रभावित होने के साथ–साथ उत्पादकता में भी भारी कमी आ जाती है ऐसी स्थिति में–

- धान की नर्सरी अलग–अलग अंतराल पर बिजाई करें।
- धान की मध्यम अवधि की प्रजातियां जैसे डी.आर.आर. 44, सीएसआर 43, नरेन्द्र 359, पी.एन.आर 381, पंत धान 10 का चयन किया जाये।
- अगर वर्षा अति विलम्ब आती है और धान की रोपाई न होने पर खेत खाली रह जाते हैं उस दशा में कम समय में तैयार होने वाली बाजरा, ज्वार, तिल, मूंग, उड़द की बुवाई की जाये और बीज दर 20–25 प्रतिशत बढ़ा दी जाये।
- रबी की फसलों जैसे तोरिया, आलू एवं सरसों की बुवाई तुरंत की जाये।
- सूखा के प्रति सहनशीलता बढ़ाने हेतु 2.5 किग्रा. यूरिया एवं 2.5 किग्रा. पोटाश के घोल का छिड़काव करें।

प्रश्नः आम के फलों की तुड़ाई के उपरांत क्या सावधानी रखनी चाहिये?

उत्तरः

- पके हुए फलों की तुड़ाई डंठल के साथ करनी चाहिये।
- तुड़ाई के समय फलों को चोट व खरोंच न लगने दें।
- फलों को उनके प्रजाति, आकार, भार, रंग एवं परिपक्वता के आधार पर अलग–अलग करना चाहिये।
- तुड़ाइ के बाद फलों को साफ पानी से धोकर छाया में सुखाकर पेटी में बंद करना चाहिये।

प्रश्नः सफेद मूसली की बुवाई का उचित समय क्या है?

उत्तरः

सफेद मूसली की बुवाई का उचित समय 15 जून से 15 जुलाई के मध्य है। इसकी बुवाई उभरी हुई बैड में पौधे से पौध की दूरी 15 सेमी तथा कतार से कतार की दूरी 15 सेमी रखते हुए बैड में लकड़ी से छेद कर लेना चाहिये। उसके बाद उन छिद्रों में क्राउन युक्त एक–एक फिंगर डालकर मिट्टी से दवा देना चाहिये।

प्रश्नः ढैंचा की हरी खाद के लिये कितना बीज प्रयोग करें और कब बिजाई करें?

उत्तरः

ढैंचा एवं सनई की हरी खाद के लिये 60–80 किग्रा बीज प्रति हैक्टर डालना चाहिये। इनकी बिजाई अप्रैल के दूसरे सप्ताह से मई के मध्य तक कर देनी चाहिये। 40–50 दिन की फसल को खेत में पलट देना चाहिये।

प्रश्नः हम मशरूम की खेती करना चाहते हैं, इसके लिये उपयुक्त बीज एवं जानकारी के लिये किससे सम्पर्क करें?

उत्तरः

मशरूम की खेती के लिये पादप रोग विज्ञान विभाग–चन्द्रशेखर आजाद कृषि विश्वविद्यालय, गोविंद वल्लभ पंत कृषि विश्वविद्यालय, राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, हरियाणा कृषि विश्व विद्यालय एवं प्रदेशों के कृषि विश्वविद्यालयों एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के राष्ट्रीय ..... अनुसंधान केन्द्र, सोलन (हिमाचल प्रदेश) से गुणवत्तायुक्त बीज एवं आवश्यक प्रशिक्षण प्राप्त कर सकते हैं।

प्रश्नः वर्मी कम्पोस्ट कैसे बनायें?

उत्तरः

किसी ऊंचे छायादार स्थान पर 2×2m×2 साइज का गढ्ढा बनायें। सबसे नीचे 11 सेमी की ईट की परत, उसके ऊपर 2 सेमी की बालू की परत, उसके ऊपर 15 सेमी मिट्टी की तह लगाकर उस पर पानी छिड़क दें। उसके बाद कच्ची गोबर की खाद की तह बिछायें उसमें 1 किग्रा. प्रति गढ्ढा केंचुआ डाल दें। उसके ऊपर 5–10 सेमी की घरेलू कचरे, फसल अवशेष बिछा दें। 20–25 दिन के अंतर पर पानी का छिड़काव करते रहें।

प्रश्नः फसल अवशेष जलाने से क्या नुकसान है?

उत्तरः

फसल अवशेष जलाने से उनकी जड़ों, पत्तियों एवंत ने में संचित पोषक तत्व नष्ट हो जाते हैं। मृदा ताप में बढ़ोत्तरी होती है, लाभदायक कीट जलकर मर जाते हैं। वातावरण प्रदूषित होता है।